पषुओं में बीमारी की जाँच कब क्यों और कैसे करायें

पषुपालक एवं किसान सामान्यतया गाय व भैंस– दूध के लिए, बकरी– दूध व माँस के लिए, भेड़ ऊन व माँस के लिए, ऊँट भार ढोने के लिए, सूअर माँस के लिए तथा मुर्गी अण्डे व माँस के लिए पालते हैं। यदि पषु स्वस्थ रहें तो पषुपालक भी प्रसन्न रहते हैं क्योंकि उन्हें पषुओं से पूरा उत्पादन मिलता है व भरपूर आर्थिक लाभ होता है। मगर ऐसा हर समय संभव नहीं हो पाता। अक्सर देखा गया है कि पालतू पषु किसी न किसी बीमारी से ग्रस्त हो जाते हैं। बीमार होने से पषु की उत्पादन क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है व पषु पालक को निम्नलिखित मदों में हानि उठानी पड़ती है।

1. पषु उत्पादन कम होने । बन्द होने से हानि
2. बीमार पषु के उपचार तथा रख–रखाव का खर्च
3. पषु चिकित्सक की फीस आदि का खर्च
4. पषुपालक व उसके परिवारी जनों का तनाव ग्रस्त रहना
5. पषु के ठीक न होने अथवा मरने की स्थिति में सम्पूर्ण हानि

उपरोक्त मदों में हानि होने से अन्ततः पषुपालक आर्थिक कठिनाई में पड़ जाते हैं। इससे बचने के लिए पषुओं की नियमित जाँच करायी जानी चाहिए ताकि उनमें उत्पन्न किसी भी बीमारी का पूर्वाभास हो जाये। पषुओं में बीमारी की जाँच होने से उससे बचने के उपाय षीघ्र अपनाये जा सकते हैं तथा बीमारी पर होने वाले खर्चे व हानि से भी बचा जा सकता है। यदि समय रहते बीमारी का उपचार ठीक हो जाता है तो पषु के उत्पादन पर भी अधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा। ध्यान रखने योग्य बात यह है कि मूक पषु अपनी बीमारी के विशय में स्वयं तो बोल नहीं सकता। अतः हमें अपने विवेक से ही उसकी बीमारी का पता लगाना होता है। ऐसे में नियमित प्रयोगषाला जाँच का महत्व काफी बढ़ जाता है। जिससे बीमारी का पता चलने पर त्वरित कार्यवाही की जा सकती है व होने वाली हानियों से बचा जा सकता है।

जाँच कब करायें:

- जब पषु के उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा हो। दूध देने वाले पषुओं का दूध उत्पादन कम हो रहा हो अथवा पषु चारा कम खा रहे हों, पानी कम पी रहे हों या चलने, उठने–बैठने में कठिनाई महसूस करते हों।
- जब पषु को बुखार हो व बेचैनी महसूस करता हो।

- जब भार ढोने वाले पषु ठीक से कार्य सम्पादन नहीं कर पा रहे हों।
- जब नये पषु खरीद कर अपने घर या बाड़े में रखे हों।
- जब पषु में बीमारी का कोई लक्षण जैसे दस्त, कब्ज, दर्द, चारा न खाना, बुखार, त्वचा पर क्षतस्थल आदि दिखता हो।
- प्रति वर्श या प्रति 6 महीने के अन्तराल पर नियमित जाँच
- माँस वाली मुर्गी में वजन कम बढ़ रहा हो।
- मुर्गियों में मृत्यु दर सामान्य से अधिक हो रही हो।
- मुर्गी का अण्डा उत्पादन कम हो रहा हो।
- मुर्गी घर में बीट रक्त युक्त दिखायी पड़े
- सूअरों में वजन कम बढ़ रहा हो।

जाँच क्यों करायें ?

- पषु की तथा पषु से रक्त, मूत्र, मल अथवा मरने के पष्चात् ऊतक व अंगों की जाँच कराने से पषु की बीमारी का पता चलता है जिससे उस पषु का तो उचित उपचार त्वरित हो सकता है तथा अन्य संम्पर्क में आये पषुओं का भी उस रोग से बचाव किया जा सकता है।
- रोग की जाँच होने से उचित उपचार पर खर्च कम आता है क्योंकि पषु चिकित्सक सिर्फ उसी रोग को ठीक करने सम्बन्धी दवा देते हैं। यदि बिना जाँच के उपचार कराया जाये तो उस समय कई प्रकार की दवायें दी जाती है जिन पर अनावष्यक खर्च होता है।
- पषुओं में कई प्रकार के संक्रामक व छूत के रोग होते हैं जो षीघ्रता से एक से दूसरे पषु में फैल सकते हैं व पूरे गांव या एक क्षेत्र के पषुओं में बीमारी उत्पन्न कर सकते हैं। ऐसी स्थिति में षुरूआती जाँच से बीमारी का पता चलने पर उसे अन्य स्वस्थ्य पषुओं में फैलने से रोका जा सकता है।
- कई प्रकार की बीमारी ऐसी हैं जो पषुओं से मनुश्य में हो सकती हैं। अतः त्वरित निदान व जाँच से पता चलने पर उन रोगों पर नियंत्रण के उपाय अपनाकर मनुश्यों में पषु जन्य रोग होने से बचाव किया जा सकता है।

- जब नये पषु खरीदें तो उनमें रोग की जाँच अवष्य करानी चाहिए ताकि उनके द्वारा कोई भी नया रोग आपके अन्य पषुओं में न फैल सके। नये पषु भी ठीक प्रकार से उत्पादन लक्ष्य के अनुसार कर सकें।
- मुक्त विष्व व्यापार के समय में पषुपालकों को यह सुनिष्चित करना पड़ेगा कि उनके पषु रोग ग्रस्त नहीं हैं व जो भी दूध व दूध से बने उत्पाद बाजार में जा रहे हैं वे स्वस्थ्य पषु–पक्षी से लिये गये हैं। अन्यथा बाजार में कड़ी प्रतिस्पर्धा के चलते पषु उत्पाद बेचना व उनका उचित मूल्य प्राप्त करना कठिन हो जायेगा। पषु–पक्षियों की नियमित जाँच से इस समस्या से बचा जा सकता है।
- पषुओं में नियमित जाँच से विभिन्न रोगों के टीकाकरण कर पषुओं के प्रभाव का भी पता चल सकता है। कई बार जाँचने पर टीकाकरण के प्रभाव का भी पता चल सकता है। जिससे यह सुनिष्चित हो जाता है कि टीकाकरण के फलस्वरूप पषु में उचित रोग प्रतिरोधी क्षमता उत्पन्न हो चुकी है अथव नहीं।
- नियमित जाँच से पषुओं में होने वाली बीमारियों के पूर्वानुमान में भी मदद मिलती है।
- कई प्रकार के रोग ऐसे हैं जो नर पषु से मादा में व मादा से नर पषु में फैल सकते हैं। यह विषेश रूप से कृत्रिम गर्भाधान के समय और महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि रोग ग्रस्त नर पषु से वीर्य लिया गया है तो उससे काफी संख्या में मादा पषु रोग ग्रस्त हो सकते हैं। अतः नर व मादा पषु दोनों की जाँच अवष्य होनी चाहिए ताकि रोगों को फैलने से रोकने में मदद मिले।

जाँच कैसे करायें ः

- पषुओं में रोग की जाँच कराने के लिए अपने नजदीक के पषु चिकित्सक से सम्पर्क करें जो पषु से विभिन्न नमूने यथा रक्त, सीरम, मल, मूत्र, त्वचा की खुरचन आदि लेकर प्रयोगषाला भिजवा सकते हैं।
- पषुपालक स्वयं भी पषु के मल (गोबर) का नमूना किसी साफ कागज की पुड़िया में या काँच/प्लास्टिक की षीषी में लेकर प्रयोगषाला ला सकते हैं जिससे पषु के पेट में परजीवियों की जाँच की जा सकती है। गोबर के नमूने एकत्रित करने के लिए सीधे पषु के मलाषय से कुछ गोबर लिया जा सकता है अथवा ताजे किये हुए गोबर में से बीच का कुछ भाग नमूने के लिए लिया जा सकता है। गोबर के नमूने के साथ मिट्टी या अन्य कूड़ा–करकट नहीं आना चाहिए।

- पषुपालक पषु रोगों में जाँच के लिए पषुचिकित्सक की सलाह से इस पुस्तिका के अन्त में दिये गये सम्पर्क सूत्रों से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। जो त्वरित कार्यवाही कर पषुओं में बीमारी की जाँच करवायेंगे व उसकी रोकथाम व बचाव के उपाय भी सुझायेंगे।
- पषुपालक पषुओं में व्यापक रूप से फैली बीमारी की स्थिति में, पषुचिकित्सक/सरपंच आदि से मिलकर फोन/तार/फैक्स/ इन्टरनैट/पत्र आदि किसी भी माध्यम से प्रयोगषाला के अधिकारियों से सम्पर्क कर उन्हें बुला सकते है या उनके पास रोग ग्रस्त पषुओं के नमूने भेज सकते हैं।
- पषुपालक छोटे पषु/ पक्षी यथा मुर्गियों में बीमारी की दषा में उन्हें सीधे प्रयोगषाला ला सकते हैं। इसके लिए कुछ बीमारी से मरी मुर्गी तथा कुछ रोग ग्रस्त मुर्गी लायी जा सकती हैं। इससे प्रयोगषाला विषेशज्ञ को इच्छित नमूने एकत्रित करने में सरलता रहती है व बीमारी की जाँच भी अच्छी प्रकार होती है।

जाँच के लिए नमूने एकत्रित करने का तरीका

1. नमूने एकत्रित करने के लिए पषुपालक/ किसान क्या करें ?

- जैसा ऊपर भी बताया गया है कि कुछ प्रकार के नमूने प्रयोगषाला परीक्षण के लिए पषुपालक स्वयं ही भेज/ला सकते हैं। इनमें पषु का गोबर जो मलाषय से सीधे लिया गया हो या ताजा किये गोबर में से गोबर के बीच का भाग लेकर प्रयोगषाला परीक्षण के लिए भेजा जा सकता है।
- पषु के षरीर पर विषेश रूप से त्वचा पर बाह्य परजीवी रहते हैं जिनको पहचान कराने व जाँच कराने के लिए एकत्रित किया जा सकता है।
- पषु में खुजली होने पर त्वचा बाल रहित हो जाती है तथा उसमें खुरन्ट भी बनने लगते हैं। ऐसी त्वचा से खुरचन लेकर उसे कागज की पुड़िया में बन्द कर काँच की षीषी में बन्दकर प्रयोगषाला परीक्षण को भेजा जा सकता है। मगर त्वचा की खुरचन लेते समय यह घ्यान रखें कि त्वचा पर गहरा घाव न हो अन्यथा वहां मवाद पडने की आषंका हो सकती है।
- पषु का मूत्र का नमूना यदि एकत्रित करना हो तो हमेषा ताजा मूत्र ही लेना चाहिए। इसके लिए जब पषु सुबह उठते हैं तो मूत्र त्याग करते हैं। इसी समय किसी साफ काँच के बर्तन यथा प्लास्क, बीकर, ट्यूब आदि में मूत्र षीघे ही एकत्रित कर लेना

चाहिए।

- कई बार सिर्फ रूई की फुरेरी लेने से भी काम चल जाता है अतः जहाँ से फुरेरी द्वारा नमूना लेना हो वहाँ से सीधे लेकर फुरेरी को ट्यूब में रख लेना चाहिए। फुरेरी लेते समय सावधानी ये रखें कि जिस ट्यूब में फुरेरी रखें उसमें तरल मीडिया यथा पी0बी0एस0 एच0बी0एस0एस0, पैप्टोन वाटर, न्यूट्रयेन्ट ब्रॉथ आदि हो जिससे फुरेरी सूखें नहीं। मुख्यतः फुरेरी द्वारा नाक, मलाषय, योनि, आँख, मुँह, गला आदि स्थानों से नमूने लिए जा सकते हैं।

- यदि पषु में विशाक्तता/जहरबाद होने की संभावना लगती हो तो पषुपालक पषु के चारे का नमूना लेकर प्रयोगषाला भेज सकते हैं। इसके लिए पषु के चारा खाने के स्थान से नमूना, चारे काटने की जगह से नमूना, दाने का नमूना तथा जहाँ पषु पानी पीते हैं वहां से पानी का नमूना लेकर प्रयोगषाला भेजना चाहिए ताकि उनमें किसी जहर की उपस्थिति का पता लगाया जा सके।

- यदि पषु को थनैला रोग होने की आषंका हो तो दूध का नमूना किसी साफ/स्वच्छ बर्तन में लेकर प्रयोगषाला भेजना चाहिए। थनैला रोग में वैसे एन्टीबायोटिक परीक्षण हेतु दूध का नमूना प्रयोगषाला से ही प्राप्त काँच या प्लास्टिक की स्टैराइल ट्यूब में ही लेना चाहिए। यदि पषु को गर्भपात हो जाता है तो गर्भित भ्रूण को किसी प्लास्टिक/पौलीथीन में अच्छी तरह बन्दकर प्रयोगषाला भेजा जा सकता है। ऐसे पषु से जब योनि से स्राव गिरता है तो उस स्राव को भी काँच या प्लास्टिक के बर्तन (फ्लास्क, ट्यूब, बीकर) में लेकर प्रयोगषाला पहुँचा देना चाहिए ताकि वहां के तकनीषियन/वैज्ञानिक विधिवत उसका षव परीक्षण भी कर लें व जरूरत के हिसाब से नमूने भी एकत्रित कर लें।

2. नमूने एकत्रित करने के लिए पषु चिकित्सक क्या करें ?

- पषु से रक्त के नमूने लेने के लिए पषुचिकित्सक संक्रमण विहीन स्थिति बनायें व नयी सुई से रक्त का नमूना लें। सामान्यतः हर पषु प्रजाति से अलग–2 जगहों से रक्त के नमूने लिए जाते हैं जिनकी जानकारी पषु चिकित्सक को होती है। गाय व भैंस की गर्दन से रक्त लिया जाना है तो ट्यूब अच्छी साफ हों व एन एस एस से अच्छी तरह धो दी गयी हों। इससे रक्त से सीरम साफ निकलता है। रक्त लेकर ट्यूब को थोडा तिरछा करके रख दें। उससे सीरम जल्दी तथा अच्छी मात्रा में निकलता है। यदि रक्त का नमूना कोषिकीय तथा अन्य रक्त परीक्षण के लिए है तो इसमें थक्कारोधी रसायन मिलाना चाहिए। इसके लिए ई0डी0टी0ए0, हिपैरिन या

सोडियम आक्जेलेट का प्रयोग कर सकते हैं। इससे रक्त का थक्का नहीं बनता व रक्त का परीक्षण आसानी से हो जाता है।

- यदि पषु से रक्त सूक्ष्म परीक्षण के लिए लिया जाता है तो संक्रमण विहीन (स्टेराइल) परिस्थितियों में रक्त एकत्रित करना चाहिए तथा ऐसे रक्त में थक्कारोधी रसायन भी स्टैराइल ही होना चाहिए। इसके लिए हिपैरिन की षीषियाँ आती हैं अन्यथा ई0डी0टी0ए0 उचित मात्रा में साफ काँच की षीषी में डालकर उन्हें ऑटोक्लेव द्वारा स्टैराइल कर लिया जाता है। इससे वातावरण से कोई दूसरा संक्रमण नहीं आ पाता।इस विधि के एकत्रित किये नमूनों से जीवाणु पृथकीकरण किया जा सकता है।
- पषु की त्वचा की खुरचन लेने के लिए त्वचा को ऊपर से अच्छी तरह साफ कर लें। फिर चाकू या स्कैलपेल से धीरे–2 खुरचन एकत्रित करें। यदि माइट का प्रकोप देखना हो तो थोड़ा गहरे भी जायें व त्वचा की डर्मिस सतह तक से खुरचन ले सकते हैं। इसकी पहचान यह है कि फिर वहाँ खून आने लगेगा। नमूना एकत्रित करने के बाद त्वचा को सक्रंमणहारी दवाओं से उपचारित कर दें।
- कई बार पषु रोगों का पता रक्त आलेप (स्मीयर) से चल जाता है। अतः पषु चिकित्सकों को चाहिए कि प्रभावित पषु से रक्त लेकर काँच की स्लाइड पर रक्त आलेप बना दें व उसे मीथेनॉल या एसीटोन या 70 प्रतिषत एल्कोहल से फिक्स कर प्रयोगषाला भिजवा दें। इस प्रकार के आलेपों से रक्त में उपस्थित परजीवियों तथा कई प्रकार के जीवाणुओं का पता लगाया जा सकता है।
- पषु चिकित्सक गोबर तथा मूत्र के नमूने साफ काँच या प्लास्टिक की षीषी में रखकर भेज सकते हैं मगर ध्यान रखें यदि इन नमूनों से सूक्ष्म जीव परीक्षण किया जाना है तो इन्हें भी स्टैराइल परिस्थितियों में एकत्रित कर भेजें ताकि जीवाणु/विशाणु पृथकीकरण में आसानी रहे।
- दूध का नमूना एकत्रित करने के लिए पहली कुछ धार छोड़ दें। फिर स्टैराइल ट्यूब में 10–15 मि0ली0 दूध एकत्रित कर प्रयोगषाला भेज दें। इससे थनैला रोग की जाँच व एन्टीबायोटिक दवा के चयन में सहायता मिलती है।
- यदि मृत पषु से षव परीक्षण के समय नमूने एकत्रित करने हैं तो नमूने एकत्रित करने का सभी सामान लेकर षव परीक्षण स्थल पर जाना चाहिए। सूक्ष्म दर्षी क्षत स्थलों के लिए विभिन्न ऊतकों व अंगों के नमूने 10 प्रतिषत फॉरमेलिन में एकत्रित करने के लिए निम्नलिखित सावधानियाँ बरतनी चाहिए।

1. ऊतकों/अंगों के नमूने पषु के मरने के बाद जितनी जल्दी हो सके एकत्रित करने चाहिए। क्योंकि मरने के बाद पषु षव में सड़न उत्पन्न होनी प्रारम्भ हो जाती है जिससे रोग की जाँच करने में बाधा आती है।

2. नमूने हमेषा किसी भी फिक्सेटिव में ही लेने चाहिए। सामान्यतया इसके लिए 10 प्रतिषत फारमेलिन प्रयोग की जाती है। यदि संभव हो तो 10 प्रतिषत बफर युक्त फारमेलिन में नमूने लेना अच्छा रहता है। यह ध्यान रहे कि फारमेलिन का घोल पहले से बना हो। तत्काल बनाने से ऊतकों के नमूने किसी और बर्तन में ले जाये जाते है व कुछ समय पष्चात फारमेलिन में डाले जाते है यह गलत तरीका है।

3. ऊतक/अंग से नमूना काटने के लिए तेज धार वाले चाकू/स्कैल पैल का प्रयोग करना चाहिए। जिससे एक बार में ही ऊतक/अंग कट जाये व बार–बार घिसना न पड़े। इससे ऊतकों को बिना नुकसान पहुँचे ही नमूने एकत्रित किये जा सकते हैं।

4. ऊतक/ अंग के नमूने में क्षत–स्थल व सामान्य दोनों तरह का ही आना चाहिए इससे अंग पहचानने में भी आसानी रहती है तथा उसमें बीमारी के फलस्वरूप उत्पन्न विकृति भी आसानी से पहचानी जा सकती है।

5. ऊतक/ अंग नमूने का आकार 1.0 सेमी से अधिक नहीं होना चाहिए। ज्यादा बड़ा नमूना होगा तो उसके संरक्षण में परेषानी आती है। छोटे–2 टुकड़े आसानी से संरक्षित हो जाते हैं।

6. ठोस अंगों यथा जिगर, गुर्दे आदि के नमूने लेते समय इनके ऊपर के आवरण (कैपसूल) भी नमूने के साथ ही आने चाहिए। कई बार ऐसा देखा गया है कि आवरण हटाने के बाद नमूने लिये जाते हैं उनमें अलग अच्छी जाँच नहीं हो पाती।

7. आँतों, नलियों आदि से नमूने लेने के लिए पहले उनका छोटा टुकड़ा काटकर एक कागज के टुकड़े पर लगाया जाता है। फिर उन्हें बीच से चीर दिया जाता है जिससे आँत की बाहरी सतह कागज पर चिपक जाती है व अन्दरूनी सतह खुली रहती है। इससे नली वाले अंग सिकुड़ते नहीं हैं।

8. आँतों या अन्य नली वाले अंगों से नमूना लेते समय इस बात का ध्यान रखें कि इनके अन्दर के तत्व सही सलामत हैं कई बार ऐसा देखा गया है कि आँत को पकड़कर व सूतकर उसके अन्दर के तत्व किसी और परीक्षण करने के लिए ले लिये जाते हैं तथा उसी में से एक टुकडा काटकर फारमेलिन में ले लिया जाता है यह गलत तरीका है क्योंकि इससे आँत की अन्दर की दीवार खराब हो जाती है जिससे

सही जाँच नहीं हो पाती। इसी प्रकार कई बार ऐसा भी देखा गया कि खोलने के बाद आँत के अन्दर का मल खुरचकर हटा दिया जाता है इससे भी आँत की दीवार खराब हो जाती है।

9. ऊतक/अंगों में जीवाणुओं से जाँच के लिए अग्नि युक्त बर्नर के सामने नमूने एकत्रित किये जाने चाहिए। नमूना जहां से लेना हो उसकी ऊपरी जगह को गर्म स्पेचुला से जला दें फिर स्टैराइल चाकू से उसे काटकर चिमटी से कटे स्थान पर जगह बनायें व नमूना लेने के लिए फुरेरी या लूप का प्रयोग करें। नमूना लेकर तुरन्त मीडिया में लगायें ताकि वह सूखे नहीं।इसी प्रकार यदि हृदय के रक्त का नमूना लेना है तो ऊपरी सतह को जलाकर फिर पॉष्चर पिपैट या सुई से अन्दर से रक्त का नमूना लें व मीडिया पर लगा लें।

10. इसी प्रकार गर्भपात हुए भ्रूण के पेट से नमूना एकत्रित किया जाता है। वैसे अधिकांषतः भ्रूण के पेट को दोनों तरफ से मजबूत घागे से बांधकर पूरा पेट बर्फ में रखकर प्रयोगषाला भेजा जाता है। इसमें से प्रयोगषाला वैज्ञानिक अपनी इच्छानुसार नमूना पेट के अन्दर से स्वयं ले लेते हैं।

11. गर्भपात हुई गाय/भैंस/बकरी आदि का सीरम नमूना गर्भपात के दिन तथा उसके 21 दिन बाद एकत्रित कर प्रयोगषाला परीक्षण को भेजना चाहिए। पषुचिकित्सक इस बात का ध्यान रखें कि यह गर्भपात के बाद का कम से कम समय है जिसके पष्चात सीरम परीक्षण कभी भी कराया जा सकता है।

विभिन्न रोगों में क्या नमूने एकत्रित करें ?

1. गल घोंटू

- रक्त का आलेप (स्मीयर)
- गले की सूजन से द्रव का आलेप
- जिगर से छापित आलेप
- तिल्ली, जिगर, लसिका गाँठें, फेफड़े आदि के टुकड़े बर्फ में रखकर तथा 10 प्रतिषत फार्मेलिन में।

2. लंगड़ी (ब्लैक क्वार्टर)

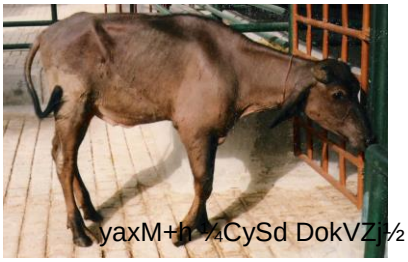

- सीरम
- गर्भित गाय का गर्भपात के 21 दिन बाद का सीरम
- गर्भित भ्रूण का पेट
- योनि से फुरेरी
- वीर्य या वीर्य की स्ट्रॉ – सभी नमूने बर्फ में

3. ब्रुसैलोसिस

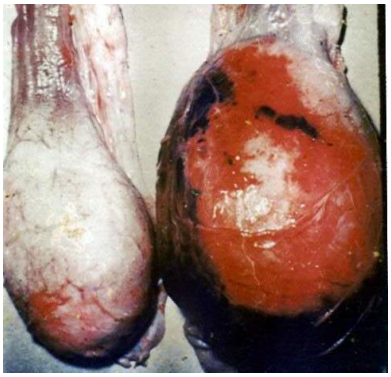

- सीरम
- गर्भित गाय का गर्भपात के दिन का तथा 21 दिन बाद का सीरम
- योनि से फुरेरी
- वीर्य या वीर्य की स्ट्रॉ
- सभी नमूने बर्फ में

4. क्षय रोग

- कफ स्टैराइल षीषी में
- रोगी पषु का दूध
- फेफड़े, लसिका गाँठों में क्षत स्थल से ऊतक नमूने
- क्षत स्थल से छापित आलेप
- क्षत स्थल से ऊतक नमूने 10 प्रतिषत फारमेलिन में

5. जहरबाद (एन्टैरोटॉक्सिमियाँ)

- छोटी आँत से मल का नमूना
- गुर्दे का नमूना
- मूत्र का नमूना

6. जोहनीज बीमारी

- मलाषय से ऊतक का आलेप
- आँतो की धोवन
- मरे पषु की आँतों की लसिका गाँठे व बड़ी आँत से नमूने

tksguht chekjh

7. अष्वग्रन्थि रोग :

- त्वचा/लसिका की वाहिकाओं से बहते मवाद का नमूना
- फेफड़े
- नाक से फुरेरी
- मवाद से बना आलेप

v"oxzfUFk jksx

8. लैप्टोस्पाइरोसिस :

- रक्त एवं सीरम
- जिगर, गुर्दे 10 प्रतिषत फार्मेलिन में
- मूत्र का नमूना
- दूध का नमूना

9. लिस्टीरियोसिस :

- गर्भित भ्रूण के दिमाग का टुकड़ा, जिगर, तिल्ली आदि
- प्लेसेण्टा

10. सालमोनैलोसिस :
    - जीवित पशु का रक्त या मरे जानवर के दिल से रक्त का नमूना
    - पित्त, जिगर, तिल्ली
    - आँतों से मल का नमूना
11. काश्ठ जीभ (एक्टीनोबेसीलोसिस) :
    - मवाद से आलेप
    - प्रभावित मांस पेषी से टुकड़ा/ ऊतक

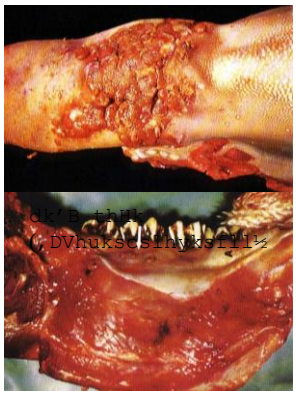

12. एक्टीनोमायकोसिस :
    - मवाद का आलेप
    - प्रभावित मांस पेसी से ऊतक
13. कैम्पाइलोबैक्टीरियोसिस :

,DVhuksek;dksfll

    - मादा तथा नर पषुओं के जननांगों की धोवन
    - जनंनागों का स्त्राव–म्यूकस आदि
14. स्ट्रैंगलस :
    - मवाद का नमूना, आलेप
    - ज़िगर के टुकड़े

15. फफूँदी संक्रमण त्वचा पर :

- त्वचा की गहरी छीलन काँच की षीषी में

16. पीपीआर :

- आँख, मुँह तथा मलद्वार से फुरेरी एच.बी.एस.एस. में–बर्फ में
- बुखार के समय का लगभग 10 मि0ली0 रक्त का नमूना थक्कारोधी रसायन के साथ बर्फ में
- लसिका गाँठें, तिल्ली, आँत, फेफड़े, जिगर आदि 10 प्रतिषत बफर युक्त फारमेलिन में

17. मुँह–खुरपका रोग :

- मुँह में फफोलों का द्रव 50 प्रतिषत ग्लिसरॉल सेलाइन में
- बुखार के समय का 10 मि0ली0 रक्त का नमूना थक्कारोधी रसायन के साथ
- दिल, जिगर, तिल्ली, लसिका गाँठें आदि के नमूने 10 प्रतिषत फारमेलिन में
- सीरम

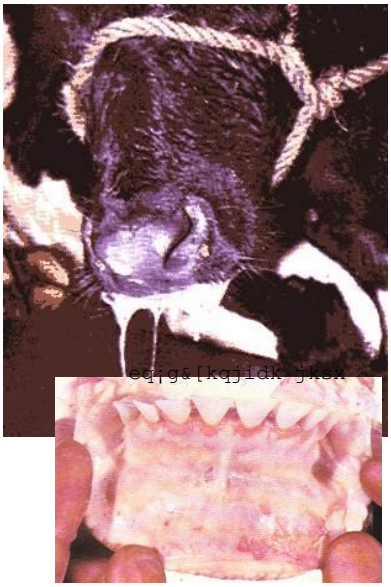
eq;g&[kqjidk jksx

cksokbu ok;jy Mk;fj;k

18. बोवाइन वायरल डायरिया :

- सीरम
- रक्त का नमूना ई.डी.टी.ए. में
- वीर्य, आँत से स्वैब, लसिका गाँठे तथा तिल्ली

19. अलर्क रोग (रेबीज) :

- आधा दिमाग– छोटे–2 टुकड़ों में व लार ग्रन्थि 50 प्रतिषत ग्लिसरीन सैलाइन

में

- आधा दिमाग– छोटे –2 टुकड़ों में 10 प्रतिषत फारमेलिन में

20. माता रोग :

- त्वचा पर क्षतस्थल के खुरण्ट 50 प्रतिषत ग्लिसरीन सैलाइन में
- खुरण्ट या त्वचा पर क्षतस्थल 10 प्रतिषत फारमेलिन में

21. आई0बी0आर0 :

- सीरम
- नर तथा मादा जानवरों के स्त्राव तथा क्षतस्थल से नमूना स्वैब आदि
- मरे जानवर से श्वास नली, फेफड़े से नमूने
- गर्भित भ्रूण से पेट के अवयव, जिगर
- सांड की वीर्य तथा जननांगों की धोवन
- नाक, आँख व मुँह के स्त्राव
- गर्भित गाय से गर्भपात के समय तथा 21 दिन बाद का सीरम नमूना

22. सूअर ज्वर :

- बुखार के समय का 20 मि0ली0 रक्त का नमूना
- सीरम
- मरे सूअर से तिल्ली, अग्नाषय,

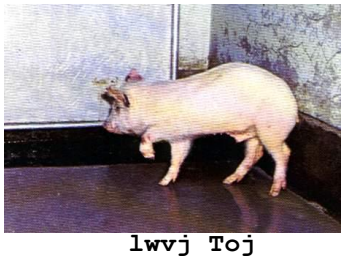

दिमाग, आँत, गुर्दो के नमूने 10 प्रतिषत फारमेलिन में

23. नीलर्सना (ब्लू टंग) :

- बुखार के समय का रक्त का नमूना हिपेरिन में स्टैराइल
- सीरम
- तिल्ली, लसिका गांठें बर्फ में

24. कुत्तों का डिस्टैम्पर :

- जिगर से छापित आलेप
- जिगर, तिल्ली, लसिका गाँठें फेफड़े, मूत्राषय, श्वास नली, दिमाग
- रक्त का आलेप
- सीरम

dqRrksa dk fMLVSEij

25. कुत्तों का संक्रामक जिगर रोग :

- जिगर का छापित आलेप
- जिगर, पित्ताषय, गुर्दे, तिल्ली 10 प्रतिषत फारमेलिन में

26. कुत्तों में पारवो विशाणु संक्रमण :

- मल का नमूना, स्वैब
- आँत के टुकड़े मल सहित

27. घोड़ों का जुकाम (इक्वायन इनफ्लूएंजा)

- नाक से स्वैब
- सीरम

28. घोड़ों की संक्रामक रक्ताल्पता :

- सीरम के नमूने दो बार (15 दिन के अन्तर से)

29. घोड़ों में हरपीज विशाणु संक्रमण :

- नाक से फुरेरी
- सीरम के नमूने
- जिगर, फेफड़े, तिल्ली 10 प्रतिषत फारमेलिन में
- गर्भित भ्रूण के पेट के अवयव

30. मवाद/फुंसी/घाव :

- मवाद की फुरेरी
- घाव के किनारे की फुरेरी

31. गिल्टी रोग :

- कान की रक्त नली से रक्त लेकर बनाया गया आलेप

- रक्त का नमूना स्टैरायल स्थिति में
- मुँह का अग्रभाग (मजल)

32. थनैला :
    - दूध (10 मि0ली0) का नमूना स्टैराइल स्थिति में
33. इरीसिपैलास :
    - रक्त
    - तिल्ली, गुर्दे, जिगर आदि बर्फ में तथा 10 प्रतिषत फारमेलिन में
34. *ई0 कोलाई* संक्रमण :
    - रक्त का नमूना
    - आँत, लसिका गाँठों से ऊतक टुकड़े 10: फारमेलिन में

35. रोटा विशाणु संक्रमण :
    - मल का नमूना
    - आँत से तथा आँतों के बीच की लसिका गाँठों से ऊतक
36. न्यूमोनिया :
    - नाक से फुरेरी, फेफड़ों का टुकड़ा

jksVk fo'kk.kq laØe.k

37. भारी धातुओं के जहरबाद :

- जिगर
- गुर्दे
- पेट के अवयव बर्फ में

38. एल्कलॉइड जहरबाद :

- जिगर, दिमाग तथा पेट के अवयव बर्फ में

39. नाइट्रेट जहरबाद :

- चारे का नमूना
- पेट का अवयव (रूमैन से)
- रक्त का नमूना बर्फ में

40. कुचला (स्ट्रिकनीन) जहरबाद :

- पेट व आँत के अवयव
- मूत्र का नमूना
- जिगर, दिल व गुर्दे का ऊतक/ भाग बर्फ में

41. सायनाइड़ (हाइड्रोसायनिक) जहरबाद :

- चारे में प्रयुक्त पौधा/ नमूना
- पेट के अवयव
- रक्त का नमूना
- जिगर 1.0 प्रतिषत मरक्यूरिक क्लोराइड में

42. कीटनाषक/ जैवनाषक :

- वसीय ऊतक
- जिगर

- पेट के अवयव
- रक्त का नमूना

43. डैग्नाला रोग :

- चारे का नमूना
- सीरम

जाँच के लिए नमूने सुरक्षित रखने का तरीका

नमूने एकत्रित करते समय इस बात का ध्यान रखा जाये कि इनके प्रयोगषाला पहुँचने तक इनमें कोई खराबी न हो। सुरक्षित एवं संरक्षित नमूने प्रयोगषाला नहीं पहुँचेगें तो जाँच पूरी तरह ठीक नहीं हो सकेगी व बीमारी का पता नहीं चल पायेगा। यहाँ विभिन्न प्रकार की बीमारियों में नमूने सुरक्षित रखने का तरीका दिया जा रहा है।

1. जीवाणु जनित रोगों की जाँच हेतु

इस प्रकार के रोगों की जाँच हेतु लिये गये नमूनों को तरल माध्यम (मीडिया) में एकत्रित करना चाहिए। ध्यान रहे कि नमूने एकत्रित करते समय पूर्ण संक्रमणविहीन (स्टैराइल) स्थिति रहे। तरल माध्यम जैसे न्यूट्रीएन्ट ब्रॉथ, पेप्टोन वाटर, टैट्राथायोनेट ब्रोथ, मैकोन्की ब्रॉथ आदि उपलब्ध नहीं तो फास्फेट बफर सैलाइन (पी0बी0एस0) में भी नमूने रख सकते हैं। इसके लिए स्टैराइल ट्यूब, षीषी, प्लास्क आदि का प्रयोग किया जा सकता है। इस प्रकार एकत्रित नमूनों को अच्छी तरह ढक्कन बन्द/सीलकर बर्फ में रखकर प्रयोगषाला भेजना चाहिए। इसके लिए थर्मस आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है। यदि प्रयोगषाला काफी दूर हो तो रास्ते में बर्फ बदली जानी चाहिए। क्योंकि एक बार रखी बर्फ 8–10 घन्टे चल जाती है। यदि उससे अधिक समय लगे तो नयी बर्फ रख लेनी चाहिए।

2. विशाणु जनित रोगों की जाँच हेतु

- नमूनों को संक्रमणविहीन (स्टैराइल) स्थिति में ही एकत्रित करें।
- नमूनों को बफर युक्त ग्लिसरीन में संरक्षित करें। परन्तु कुछ विशाणु (यथा रिन्डरपेस्ट) ग्लिसरीन में मर जाते हैं अतः उस परिस्थिति में सिर्फ बर्फ में रखकर हीं

भेजें।

- सभी षीषी, फ्लास्क, बोतल आदि जिनमें नमूने रखे गये हो को अच्छी तरह बन्द सीलकर प्रयोगषाला भेजें जिससे बर्फ का पानी नमूनों में प्रवेश न कर पाये।

3. जहरबाद की जाँच हेतु

- जहरबाद की जाँच हेतु नमूनों को बर्फ में रखकर भेजा जाना चाहिए तथा उनमें कोई रासायनिक संरक्षक पदार्थ नहीं मिलाना चाहिए। न्यायिक प्रक्रिया में नमूने हमेषा पुलिस की उपस्थिति में एकत्रित किये जाने चाहिए।

4. रोगी प्रतिरोधी क्षमता जाँच हेतु

- ऊतक व अंगों के भाग बफर युक्त फार्मेलिन में
- सीरम को 1:1000 मरथियोलेट की एक बूँद प्रति मि0ली0 के हिसाब से डालकर संरक्षित करें।
- सभी नमूनों को यथा रक्त, सीरम आदि को बर्फ में रखकर भेजें।

5. ऊतक/ अंगों के सूक्ष्म दर्षी अध्ययन हेतु

- 10 प्रतिषत फारमेलिन में या 10 प्रतिषत फारमोल सेलाइन या 10 प्रतिषत बफर युक्त फारमेलिन में

6. परजीवी रोगों की जाँच हेतु

- रक्त का आलेप
- मल/गोबर को षीषी में 10 प्रतिषत फारमेलिन डालकर

जाँच के लिए नमूने प्रयोगषाला भेजने का तरीका

- नमूने एकत्रित कर उन्हें अच्छी तरह से बन्द बरतन यथा षीषी, प्लास्क, बोतल आदि में रखना चाहिए। इस बात का ध्यान रखें कि बरतन के अवयव बाहर न निकलें।
- नमूने एकत्रित किये गये बरतन पर नमूने का नम्बर, पता/पषु नम्बर आदि अवष्य लिखें व इसका ख्याल रखें कि वह नम्बर/ नाम/पता आदि मिटे नहीं। अच्छा तो यह रहता है कि पानी से खराब न होने वाली स्याही युक्त पैन से लिखा जायें। या

एक सादा कागज पर लिखकर उसे बोतल। बरतन पर चिपका देते हैं। फिर उस पर पारदर्षी टेप लगा दिया जाता है जिससे कि वहाँ लिखा नम्बर खराब नहीं होता।

- नमूनों के साथ एक पत्र अवष्य भेजना चाहिए जिसमें सम्बन्धित नमूने के विशय में जानकारी यथा रोग का इतिहास, लक्षण, क्षतस्थल, नमूने का प्रकार, उपचार आदि का विवरण हो तथा यह भी दर्षाया गया हो कि किस प्रकार का परीक्षण किया जाना है।
- इस प्रकार के पत्र की एक प्रति नमूने के साथ तथा एक प्रति साधारण डाक से अलग से भेजी जानी चाहिए। नमूने के साथ पता की प्रति को इस प्रकार संभालकर रखें कि वह खराब न हो।
- नमूने भेजने के लिए व्यक्तिगत/स्पीडपोस्ट/कुरियर या पंजीकृत डाक का माध्यम अपनाया जाना चाहिए। इसमें व्यक्तिगत रूप से किसी व्यक्ति द्वारा नमूने यदि प्रयोगषाला पहुँचाये जाँय तो यह उत्तम विधि है क्योंकि नमूने पहुँचाने वाला व्यक्ति नमूनों को सँभालकर ले जायेगा व यदि रास्ते में बर्फ कम पड़ जाये/पिघल जाये तो नयी बर्फ भी दुबारा डाल लेगा। नमूने भेजने के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्र की नमूना प्रति भी पुस्तिका के अन्त में लगायी जा रही है।

पषु रोग जाँच के लिए नमूने एकत्रित, संरक्षित करने तथा प्रयोगषाला भेजने में बरते जाने वाली सावधानियाँ

- जाँच हेतु नमूने पषु की मृत्यु के बाद जितना षीघ्र हो सके उतना षीघ्र एकत्रित करने चाहिए तथा प्रतिनिधि नमूना एकत्र करना चाहिए।
- नमूने अच्छी तरह से संरक्षित कर भेजें ताकि वे रास्ते में खराब न हों।
- नमूनों के साथ पूर्ण जानकारी यथा नम्बर, सम्बन्धित पषुपालक का नाम/पता आदि अवष्य होनी चाहिए।
- जाँच के लिए नमूना भेजते समय इस बात का उल्लेख अवष्य हो कि कौन सी जाँच करायी जानी है।
- रोग का इतिहास, रोग का वर्णन, षव परीक्षण के नतीजे व संभावित बीमारी का वर्णन अवष्य होना चाहिए।
- पत्र की एक प्रति सीधे भेजी जानी चाहिए व एक प्रति नमूनों के साथ रखनी चाहिए।
- नमूनों के बरतन इस प्रकार बाँधे जायें कि रास्ते में टकराकर टूटें नहीं। इसके लिए रूई, वस्त्र या थर्मोकॉल का प्रयोग करें।

पषु रोग जाँच में लगी प्रयोगषालायें व उनके सम्पर्क सूत्रः

1. केन्द्रीय प्रयोगषाला
   संयुक्त निदेषक (कैडराड)
   भारतीय पषुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
   इज्जतनगर – 243 122 उ0प्र0
   फोनः 0581–2302188; फैक्सः 0581–2302188/2303284

2. संयुक्त निदेषक
   भारतीय पषुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
   हैब्बल, बंगलौर – 560 024
   फो0 080 – 23412835, फैक्स : 080 – 23412509

3. प्रभारी अधिकारी
   भारतीय पषुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान

37, बैलगदिया रोड,
कोलकाता – 700 037
फो0 033 – 25286358, 25582965

4. संयुक्त निदेषक (केवल विदेषी बीमारियों के लिए)
उच्च निगरानी पषु रोग प्रयोगषाला
आनन्द नगर, भोपाल – 462 021
फो0 0755 – 2759204, फैक्स : 0755 – 2758842

5. प्रभारी अधिकारी
भारतीय पषुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान
पालमपुर – 176 061
फो0 01894 – 230526, फैक्स : 01894 – 233663

6. संयुक्त निदेषक
क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगषाला (पष्चिमी)
रोग निदान अनुभाग,
पुणे – 411 007 (महाराश्ट्र)
फो0 020 – 25692135, फैक्स – 020 25691474

7. संयुक्त निदेषक (रोग निदान)
क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगषाला (दक्षिणी क्षेत्र)
पषु स्वास्थ्य एवं पषु–चिकित्सा जैविक पदार्थ
हैब्बल, बंगलौर – 560 024
फो0 080 – 23412367, फैक्स 080 – 23411502

8. संयुक्त निदेषक (रोग निदान)
क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगषाला (उत्तरी क्षेत्र)
पषु स्वास्थ्य संस्थान, लाजेवाली रोड
जालंधर (पंजाब)

9. संयुक्त निदेषक
क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगषाला (पूर्वी क्षेत्र)

रोग निदान प्रयोगषाला
पषु स्वास्थ्य एवं पषु चिकित्सकीय जैविक पदार्थ
37, बैलगदिया रोड, कोलकाता – 700 037
फोन : 033 – 2556547, फैक्स : 033 – 25565021

10. उपनिदेषक (पषुपालन)
क्षेत्रीय रोग निदान प्रयोगषाला (उत्तर पूर्वी क्षेत्र)
पषु स्वास्थ्य केन्द्र
पषुपालन एवं पषु चिकित्सा सेवा विभाग,
खानपारा, गौहाटी (असम)
फोन : 0361 – 2544609

पषुओं को रोगों से बचाने के लिए क्या करें ?

1. पषुओं को रोगों से बचाने के लिए स्वच्छता रखें। पषुघर/फार्म पर पानी न रूकने दें। दिन में कम से कम दो बार सफाई करने की व्यवस्था रखें। गोबर/मल मूत्र को उठाने/हटाने की यदि तुरन्त व्यवस्था हो तो ठीक रहता है अथवा एक निष्चित अंतराल पर इन्हें हटाकर सफाई की व्यवस्था रहनी चाहिए।

2. समय–समय पर कीटनाषक– जैवनाषक दवाओं का छिड़काव पषुघर में करते रहना चाहिए जिससे वहाँ अनावष्यक कीट न पनपने पायें। कीट पषु को काटकर खून तो चूसते ही हैं साथ ही विभिन्न प्रकार की बीमारियाँ भी फैलाते हैं। अतः कीटों पर नियंत्रण कर बीमारियों से बचाव हो सकता है।

3. पषु फार्म पर साफ पानी की व्यवस्था रहनी चाहिए जो पषु के पीने तथा साफ–सफाई के लिए हो। पानी की नियमित जाँच भी कराते रहना चाहिए तथा उसमें क्लोरीनीकरण भी कराते रहें जिससे जानवरों का पानी जन्य रोगों से बचाव हो सकेगा।

4. पषुघर यदि पक्का है तो फिनाइल या अन्य संक्रमणहारी दवाओं से सफाई करा देनी चाहिए। जिससे बीमारी के कीटाणु मर जाते हैं।

5. किसी भी पषु में बीमारी होने पर उसके रखने की व्यवस्था अलग से करनी चाहिए तथा कोषिष यह रहे कि बीमार पषु की सेवा में लगे व्यक्ति स्वस्थ्य पषुओं के पास न जायें एवं उनकी व्यवस्था अलग रहे।

6. वर्शा के मौसम में जगह–2 पानी भर जाता है व खरपतवार घासें उग आती हैं। कई बार पानी की नाली के किनारे की घास भी काफी बडी हो जाती है। इसी प्रकार तालाब/पोखर के किनारे की घास पर कई प्रकार के परजीवियों के बच्चे/लारवे आदि रहते हैं। अतः जब पषु को ऐसे किसी स्थान का पानी या चारा दें तो ध्यान रखें। अन्यथा पषु को परजीवी रोग होने का खतरा रहेगा।

7. नवजात बछड़े/बछड़ियों को गाय/भैंस का पहला दूध (खीस) अवष्य पिलायें। खीस में रोगों से लड़ने की ताकत होती है अतः खीस उचित मात्रा में नवजात बछड़े/बछड़ियों को पिलाने से उनमें न्यूमोनिया/दस्त/अतिसार आदि रोग कम होते हैं।

8. बछड़े/बछड़ियों के रखने की व्यवस्था बड़े पषुओं से अलग करनी चाहिए। कई प्रकार के रोगों के कीटाणु बड़े पषु से बछड़े/बछड़ियों में चले जाते हैं व रोग उत्पन्न करते हैं जबकि बड़े पषुओं में ये सामान्य रूप से बिना कोई रोग उत्पन्न किये पड़े रहते हैं।

9. पषु के बीमार होने पर तुरन्त नजदीक के पषु चिकित्सक को दिखायें। किसी अन्य व्यक्ति को नहीं। अक्सर ऐसा देखा जाता है कि पहले गाँव/घर में ही सामान्यजन पषु का उल्टा–सीधा उपचार करते हैं जिससे फायदा होने की जगह नुकसान ही अधिक होता है। अतः पषु में बीमारी का पता चलते ही तुरन्त पषु–चिकित्सक से सलाह लें व पषु को उचित उपचार दिलायें ताकि कम से कम नुकसान हो।

10. यदि पषु चिकित्सक बीमार पषु से कुछ नमूने लेकर प्रयोगषाला परीक्षण की सलाह देते हैं तो अवष्य करायें व नजदीक की प्रयोगषाला में नमूने भिजवायें। इससे बीमारी का पताकर उचित इलाज होने में काफी मदद मिलती है।

11. बीमार पषु की किसी कारणवष मृत्यु हो जाती है तो उसका षव परीक्षण अवष्य कराना चाहिए। अक्सर ऐसा देखा गया है कि पषुपालक/किसान भाई पषु के मरने के बाद हताष हो जाते है व उसकी जाँच नहीं कराते जबकि मरे पषु की षव परीक्षा व आगे जाँच से बीमारी का पक्का पता चल जाता है जिससे अन्य स्वस्थ्य/ जीवित पषुओं का उचित उपचार कर बचाया जा सकता है।

12. पषुओं का चारा व पानी ठीक होना चाहिए। इनमें कीटनाषक न मिलें हों इस बात की सावधानी रखनी चाहिए। ऐसा देखने में आया है कि चारे की फसल पर कीटनाषक का छिड़काव करने कुछ ही बाद उसका उपयोग चारे के लिए कर दिया जाता है इससे चारे में कीटनाषक दवा की काफी मात्रा पषु में चली जाती है व

जहरबाद करती है जिससे पषु बीमार हो जाते है। दूसरे आपके चारे की फसल के पास के खेत में किसी अन्य व्यक्ति ने कीटनाषक दवा का छिड़काव किया व कीटनाषक दवा हवा से उड़कर आपके चारे की फसल पर आ गयी। ऐसे चारे से भी पषु में रोग उत्पन्न हो सकता है। कई बार ऐसा देखा गया है कि किसान भाई कीटनाषक छिड़काव करने वाली डोलची को किसी गड़ढे के पानी में धो लेते है। यदि उस पानी को कोई पषु पी ले तो उसमें जहरवाद हो जायेगा। अतः इन बातों का ध्यान रखें ताकि पषुओं में कीटनाषक से विशाक्तता/जहरबाद न हो।

13. कई बार किसान भाई कीटनाषक दवा के डिब्बे को घर या पषु घर में ऐसे स्थान पर रख देते हैं जहाँ नीचे जानवर का चारा/दाना आदि रखा होता है। ऊपर से कीटनाषक दवा के गिरने से चारे/दाने में दवा मिल जाती है व पषु के खाने पर रोग उत्पन्न करती है। अतः कभी भी ऐसे किसी स्थान पर कीटनाषक दवा न रखें जहां चारा/दाना रखा जाता है।

14. पषु को अच्छा चारा दाना ही खाने को दें। अधिक दिन का रखा हुआ/सीलन युक्त/फफूँदी लगा चारा/दाना पषु को नहीं खिलाना चाहिए। क्योंकि इस प्रकार के चारे/ दाने में फफूँदी जन्य विश होते हैं जो पषु की रोगों से लड़ने की क्षमता को कम करते हैं व पषु में जहरबाद उत्पन्न करते है।

15. पषुओं में समय–समय पर पेट के कीड़े मारने की दवा चिकित्सक की सलाह से अवष्य देनी चाहिए। क्योंकि यदि पषु के पेट में कीड़े हैं तो जो चारा–दाना खाने को दिया जा रहा है उसमें अधिकांष पोशक तत्व पेट के कीड़े खा जाते हैं व पषु अपनी पूरी क्षमता से उत्पादन नहीं कर पाता। अतः पषु से उत्तम उत्पादन कराने की दषा में उसे पेट के कीडे मारने की दवा साल में दो बार प्रति 6 मास पर अवष्य देनी चाहिए। इसके बावजूद भी षंका होने पर पषु के गोबर की जाँच प्रयोगषाला में कर लेनी चाहिए।

16. पषुओं को विभिन्न प्रकार के संक्रामक रोगों से बचाने के लिए टीकाकरण करायें। विभिन्न संक्रामक रोगों की टीकाकरण इस प्रकार किया जाता है।

गाय व भैंस में टीकाकरण

मुँह–खुरपका रोग (आयल) – पहला टीका 3 सप्ताह पर
– दूसरा टीका 3 – 3.5 माह पर
– तीसरा टीका 6 माह पर

– फिर प्रतिवर्श

मुँह–खुरपका रोग – प्रथम टीका 4–6 माह की उम्र पर

– प्रति 6 माह बाद

ब्रुसैलोसिस – 4–8 माह की उम्र पर

लंगडी (ब्लैक क्वार्टर) – 6 माह की उम्र पर, फिर प्रति वर्श

गलघोंटू (एच0एस0) – 6 माह की उम्र पर, प्रति वर्श मानसून से पहले

भेड़ व बकरी में टीकाकरण

गर्भित भेड़ में – गर्भावस्था की 2 माह पर जहरबाद का पहला टीका
– गर्भावस्था की 4 माह पर जहरबाद का दूसरा टीका

सूअर में टीकाकरण

– सूअर ज्वर की टीका– 6 सप्ताह की आयु पर
– उसके बाद प्रति वर्श

कुत्तों में टीकाकरण

रेबीज का टीका – 3 माह की आयु में
– उसके बाद प्रति वर्श

डिस्टैंम्पर का टीका – 12 सप्ताह की उम्र पर
संक्रामक जिगर रोग – इन सभी का एक ही टीका आता है
पारवो विशाणु संक्रमण जिसे 6–12 सप्ताह पर लगाना चाहिए
लैप्टोस्पारोसिस तथा फिर प्रति वर्श

मुर्गियों में टीकाकरण

मेरक रोग का टीका – चूजों के पैदा होने के तुरन्त बाद
रानीखेत रोग (आरडीएफ)– 1–7 दिन
रानीखेत रोग (आरडीएफ)– 4 – 5 सप्ताह
रानीखेत रोग (आर$_2$बी) – 8 – 10 सप्ताह
रानीखेत रोग (ऑयल इमल्षन एवं निश्क्रिय) – 16 – 18 सप्ताह
माता रोग – 6 – 8 सप्ताह
गम्बोरो बीमारी (निश्क्रिय) – 15 – 20 दिन, 16 – 18 सप्ताह पर
संक्रामक ब्रोन्काइटिस (आई0बी0) – 4–16 सप्ताह
संक्रामक श्वासनली रोग (आई0एल0टी0) – 8 सप्ताह
मुर्गी हैजा – 6 सप्ताह

पषु रोग निदान के लिए नमूने भेजने का प्रपत्र

पत्रांक ..... दिनांकः .....

सेवा में,

संयुक्त निदेषक (कैडराड)
भारतीय पषुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर – 243 122, बरेली (उ0प्र0)

पषु की प्रजाति ..... नाम/नं0 .....
पहचान चिन्ह .....
उप–जाति ..... उम्र ..... लिंगः नर/मादा .....

संक्षेप में बीमारी का विवरण (उपचार व अन्य विवरणों के साथ)

षव – परीक्षण के नतीजे :

नमूना : (रक्त/मल/मूत्र/ऊतक/अंग का टुकडा/सीरम/वीर्य)

नमूने में प्रयुक्त संरक्षण विधि/रसायन :

क्या परीक्षण कराना चाहते हैंः

हस्ताक्षर पषु चिकित्साधिकारी